रिकॉर्ड :– महफिल में जल उठी शमा परवाने के लिए,
प्रीत बनी है दुनिया में मर जाने के लिए.....
आज भारत में दशहरा मनाय रहे हैं। कौन? ये बाप फरमाते हैं कि आसुरी सम्प्रदाय दशहरा मनाय रहे हैं और फिर तुम, जो ब्राह्मण सम्प्रदाय हो (...); क्योंकि दैवी सम्प्रदाय नहीं कह सकते हैं। जैसे लिखा हुआ है गीता में वा भागवत में। ये जानते हो कि ब्राह्मण सम्प्रदाय है, जो पीछे दैवी सम्प्रदाय बनने वाली है। अभी ये बच्चे जानते हैं कि ये जो रामायण है, जैसे कि आज इनका रामायण पूरा होना चाहिए; परन्तु पूरा होता नहीं; क्योंकि अगर रावण मरे, दशहरा करे, तो फिर रामायण की कथा पूरी हो जाए; परन्तु रामायण की कथा पूरी तो होती नहीं है। फिर भी ये रामायण की कथा चलती रहेगी– ये फलानी चोरी हो गई, ये हो गई, (वो) हो गई; क्योंकि ये है, सम्पूर्ण जब दशहरा होता है तो भई सीता का छुटकारा हो गया। ठीक है ना बच्चे! परन्तु छुटकारा होता ही नहीं है। अच्छा, छुटकारा होता है, किससे? महाभारत से। अभी ये समझ की बात है, हाँ। रामायण क्या है और फिर महाभारत क्या है? अभी वो दुनिया तो जानती नहीं है कि रामायण और महाभारत, ये दोनों का कनेक्शन है। महाभारत की लड़ाई से रावण राज्य खतम होने का है। पीछे कभी रामायण या दशहरा नहीं मनाने का है। तो गीता वा भागवत या महाभारत, ये हैं, रामायण, ये रावण के राज्य को खतम करने वाले। सो अभी तो टाइम है। अभी तुम्हारी तैयारी हो रही है– ज्ञान के अस्त्र–शस्त्र। वो अस्त्र–शस्त्र नहीं; ज्ञान के अस्त्र–शस्त्र। वो जो रावण की लड़ाई है, वो है अस्त्र–शस्त्रों के साथ। देखो, हिंसक है ना वो लड़ाई। तुम्हारी है अहिंसक। हिंसक लगने की है, पर तुम जो जीत पहनते हो। तो ये तुम्हारी है गीता। तुम गीता का ज्ञान फिर सुनते हो ना। गीता के ज्ञान से क्या होने का है? ये रावण राज्य खलास होने का है; परन्तु वो तो खलास कर देते हैं। आज खलास करेंगे रावण को मार कर–करके। रावण के मारने के बाद चाहिए रामराज्य; परन्तु वो तो होता ही नहीं है; क्योंकि शास्त्रों का भी कनेक्शन है ना बच्ची। रामायण और ये महाभारत। तो महाभारत है रावण राज्य खलास करने के लिए। ये लगेगा ना लड़ाई, तो उसमें क्या होगा? तो देखो, कितनी गुप्त समझने की बात है! इसमें फिर ... बुद्धि चाहिए। इसमें विशाल बुद्धि चाहिए। कि शास्त्रों का कनेक्शन का बाबा समझा रहे हैं कि रामायण और महाभारत (...)। महाभारत की लड़ाई से रावण का राज्य खतम होने का है। ऐसे नहीं है कि ये सिर्फ रावण को जलाने से कोई रावण राज्य खलास होता है। ना। ये तो खलास करते आते हैं रावण को; परन्तु नहीं, फिर भी वो रामायण चलता रहता है; क्योंकि संगम में चाहिए। संगम आना चाहिए ना बच्ची। तो ये संगम है। तुम तैयारी कर रहे हो रावण राज्य पर विजय पहनने के लिए। ये ज्ञान के अस्त्र–शस्त्र चाहिए। वो लड़ाई नहीं है जो राम और रावण की लगी है, जिसमें तुम बच्चे जानते हो कि युद्ध हुई है, फलाना हुई है। तो कितना रात–दिन का फर्क है! शास्त्र भी जो बनाये गए हैं सो इस (...), जो ये ड्रामा है सारा, ये उनके ऊपर बैठ करके जिन्होंने बनाया है भक्तिमार्ग वालों ने; क्योंकि निमित्त बने हुए हैं ना। तो अभी तुम यहाँ शांत बैठे हो। तुम जानते हो कि हमको ये माया के ऊपर अर्थात् रावण राज्य के ऊपर विजय पहननी है और विजय कैसे पहननी है? योगबल से। ठीक है ना। तो ये हुई गुप्त बात, सारी गुप्त बात, ये 5 विकार रूपी रावण के ऊपर तुम्हारी विजय है। किससे? ये गीता द्वारा। क्योंकि बाप गीता सुनाय रहे हैं ना बच्ची। भागवत तो कुछ समझो ही नहीं, है ही नहीं। भागवत कहा जाता है– कृष्ण के चरित्र। वो तो रद्द हो गया। समझा ना बच्ची!

वास्तव में भागवत जिसमें श्री कृष्ण के चरित्र हैं, वो तो रद्द हो गया। कृष्ण के चरित्र कोई हैं नहीं, जो भागवत में लिखा हुआ है– अकासुर को, बकासुर को मारा। अरे, बहुत ही कथाएँ लिखी हुई हैं भागवत में– गोपियों का चीर हरण फलाना–टीरा। ये सभी फालतू हैं। परंतु बाप समझाते हैं कि मनुष्य तो आज कोई खुशी तो नहीं मनाते हैं ना बच्ची। अगर रावण मर जावे तो खुश होवे ना। तुम बच्चियाँ जानती हो कि जब ये विनाश होगा, महाभारी महाभारत लड़ाई के बाद, तब ही तुम जानते हो कि रावण राज्य खतम होंगे। तो ये समझा ना अभी कि महाभारी महाभारत की लड़ाई से ये जो रावण का, ये रामायण में इतना सब लिखा हुआ है, वो सभी खतम हो जाएँगे। इस महाभारी महाभारत के लड़ाई से, सब सीताएँ, सब भक्ति, ये सभी भक्तिमार्ग खतम हो जाएँगे। उसको ही कहा जाता है– भक्तिमार्ग खतम, रावण राज्य खतम; क्योंकि अभी सीढ़ी में दिखलाया गया है, जो नई सीढ़ी निकल रही है, तो जबसे रावण राज्य शुरू होते हैं तब से भक्तिमार्ग शुरू होता है। तो अभी भक्तिमार्ग मुर्दाबाद होगा तो रावण राज्य भी मुर्दाबाद होगा। किससे? इस महाभारी महाभारत लड़ाई से। ये निमित्त बनी हुई है। समझे! इसमें हमारा कोई कनेक्शन नहीं है। हमारा कनेक्शन है सिर्फ योगबल से इस पर जीत पहनना। तो योगबल से जब तुम बच्चे जीत पहनते हो तो तुमको बहुत सफाई तो चाहिए ना। तो देखो, तुम्हारे लिए फिर ये सफाई के लिए गाया कि शंकर द्वारा। तुम बच्चों के लिए ये सफाइयाँ हो जाती हैं। कहा जाता है ना– शंकर आँख खोलते हैं (...)। अभी है ये भी दंत कथा। शंकर आँख खोलते हैं तो खतम हो जाते हैं। इससे ये समझाते हैं कि शंकर द्वारा शांति मिलती है। ये लोग इनके ऊपर ऐसे समझाया है। तो गड़बड़–घोटाला बहुत है ना शास्त्रों में, भक्तिमार्ग में। सूत सारा मूँझा हुआ है मनुष्य का। तो बाप बैठ करके समझाते हैं बच्चों को। अभी ये गुह्य बात है समझने की। देखो, बाबा ने बच्चों को, बुद्धिडयों–2 को कह दिया है– ये तो बहुत बुद्धि चाहिए इसमें, जो पढ़े बुद्धि होवे रामायण–महाभारत वगैरह, वो उस(में) बुद्धि चलाय सकेंगे। नहीं तो बाबा कह देते हैं..बुद्धिडयों को, भई एक तो बाप को याद करते रहो तो विकर्म विनाश हो जाएगा। तुम्हारे बुद्धियोग लगाने से ये रावण खतम हो जाएगा, ये सारा रामायण ही खतम हो जाएगा, जो पढ़ते आते हैं। रामायण को भी बहुत पुराना दिखलाते हैं ना। जानते नहीं हैं कि रावण का राज्य कभी(कब) शुरू हुआ है। तो ये तिथि–तारीख भी लिखी जाती है। तो रावण राज्य शुरू यानी रामायण शुरू। अभी रामायण शुरू तो फिर रामायण शुरू का भी रामायण खतम होना...। तो महाभारत की लड़ाई से गीता के (...); क्योंकि गीता का कनेक्शन है महाभारी महाभारत लड़ाई के लिए। भागवत है नहीं बीच में; क्योंकि तुम गीता सुनते हो और लड़ाई लगती है। तुम गीता सुन करके राज्य पाते हो। लड़ाई लगती है सफाया करने के लिए। ठीक है ना बच्ची। अभी भागवत के जो चरित्र हैं, वो सभी हैं फालतू; क्योंकि शिव का नहीं है ना, शिवपुराण तो नहीं है ना वास्तव में। नहीं तो इनका नाम होना चाहिए– शिवपुराण। शिवबाबा बैठ करके ये सभी बच्चों को ज्ञान देते हैं। तो इनको होना चाहिए– शिवपुराण। तो पुराण अभी बाबा कहते हैं गीता को ही; क्योंकि सबसे ऊँचा है ना गीता का शास्त्र। है थोड़ा–बहुत। गीता छोटी क्यों बनाई है? कि इतने दूसरे सभी पुस्तक इतना बहुत बड़े–2 बनाए हैं, रामायण भी बड़ा बनाया है, महाभारत भी बड़ा बनाया है। देखो, ग्रंथ तो बहुत ही बड़ा बनाया है। सब चीज़ बड़ी बनाते हैं। मनुष्य की जीवन कहानी भी बड़ी बनाई है। देखो, अभी ये नेहरु मर गया। उनकी कितनी वॉल्युम्स इतनी–2 बनाते हैं, मालूम है? अभी ये भी मरा है शास्त्री जी, इसका

भी वॉल्युम्स बनाएँगे। क्यों भला? ये जो गीता है, जिसमें भगवान शिवबाबा आते हैं, उनकी वॉल्युम कितनी बड़ी होनी चाहिए। बाप आय करके सिर्फ बच्चों को कहते हैं– बच्चे, मुझे याद करो, तुम्हारा विकर्म सब विनाश हो जाएगा और इस चक्र को सिर्फ समझो। इसलिए गीता का एक गुटका बनाते हैं इतना। ये दिखलाने के लिए कि गीता कोई इतनी बड़ी है भी नहीं। गीता है बहुत छोटी, कण्ठ में करने की। लॉकेट बनाते हैं। तुम...बच्चों को मालूम है गीता का पुस्तक का इतना, ये हमने खुद बनाए हैं, चाँदी के, सोने के इतने वो गुटके होते हैं, उनमें सारी गीता है। बहुत पतले अक्षर हैं, जिसका लॉकेट बनाते हैं, डालते हैं। देखो बाबा भी तुम्हारे गले में एक लॉकेट पहनाते हैं ना। एक तरफ में राज्य, एक तरफ में वो त्रिमूर्ति। तो उसमें क्या है बाकी कुछ। कुछ बहुत लिखत कोई होती है थोड़ी? बाबा क्या कहते हैं, कुछ भी लिखत नहीं है, कुछ भी समझानी। ये तो भले तुमको डिटेल झाड़ का समझाते हैं; पर ज्ञान दो अक्षर का है– अलफ और बे। ये कंठ करना है तुमको। लॉकेट–वॉकेट की पहनने की कोई बात है यहाँ? लॉकेट नहीं पहनने का है। ये गुप्त। ये इसको कहा ही जाता है– गुप्त मंत्र का लॉकेट अंदर में पहनना है। मन्मनाभव, मुझे याद करो, तो तुम्हारा जो विकर्म है, विनाश हो जाएगा और ये कथा तुमको सीढ़ी 84 की, सीढ़ी 84 की भी एक जन्म की, एक सेकेण्ड की बात है ना समझने की। अब यहाँ सत–त्रेता–द्वापर–कलहयुग, उसमें इतने–2 जन्म लिए, 84 पूरा हुआ। है ना, गिनती है ना ठीक। तो देखो, ज्ञान कितना थोड़ा है। कहते हैं ज्ञान सागर है। भई कितने भी कलम, फलाने बोलेंगे– ये करेंगे, तो भी देखो, सुनाते भी आते हैं बरोबर– तुम ये जो कागज़ इकट्ठे करो शुरू से ले करके तो ढेर हो जावें, कितनी पुस्तक बन जावें। फिर भी वो क्या करते हो तुम सभी? वो है, बाप बैठ करके डिटेल भी समझाते हैं और नटशेल में एक/दो अक्षर भी, अलफ और बे भी कहते रहते हैं। तो याद तुमको अलफ और बे करना है। बाकी उसमें सारा झाड़ का झाड़ आ जाते हैं, ड्रामा का ड्रामा आ जाते हैं। ये टाइम क्यों लगता है इतना सभी? बच्ची, तुम्हारे ऊपर पाप का बहुत बोझा है। इसको याद का जो है ना, तो देखो याद की मुख्य बात रहती है। योग, जिसको बाबा ने समझाया ना– भारत का प्राचीन योग, अभी योग में ही तुम बच्चों को तकलीफ पड़ती है,... योग में ही तुम भूलते हो। और बात तो कुछ भी नहीं है ना। बाप कहते हैं तुम बाप को याद करो तो कभी भी विघ्न नहीं पड़ेगा और अगर याद न करेंगे तो विघ्न पड़ेंगे। अभी देखो, हर एक से पूछो। बरोबर ना, जब देहअभिमानी बनते हैं, फिर कोई–न–कोई विकार में या फलाने में फँस जाते हैं। अभी अगर देहीअभिमानी बनते रहें, तो ऐसे कुछ भी नहीं होगा। बस देहीअभिमानी पिछाड़ी में जब बन जाते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार, आधाकल्प तुमको कुछ नहीं होता है–ठीक है बच्चे, न कोई विघ्न, न कोई बात, न कोई झूठ, न कुछ नहीं, कुछ भी नहीं होता है। तो देखो, ये कितनी गुह्य बातें हैं समझने की, धारण करने की। क्या–2 हैं भक्तिमार्ग में अम्बार, शास्त्र वगैरह–2 इतना सभी। भले कहते भी हैं कि पतित–पावन, वो ज्ञान का सागर है। बरोबर फिर ये भी सुनाते ही रहते हैं। इतनी बातें, कितनी बातें सुनाई हैं शुरू से ले करके। फिर भी कहते हैं कि बस, है अलफ और दो। उसका ये विस्ता(र)... बीज और झाड़ का विस्ता(र)। बड़ा है ना फर्क। रात–दिन का फर्क। तो बीज भी छोटे–ते–छोटा है और झाड़ इतना बड़ा है। तो ये ज्ञान भी बिल्कुल थोड़े में थोड़ा है, विस्तार बहुत है जैसे। तो भेंट बाप समझाते हैं; क्योंकि आज दशहरा है ना। तो याद आया कि दशहरा है। तो दशहरे का, ये रामायण का, ये महाभारत से क्या तैल्लुक है? पीछे ये तो भले भागवत भी

बनाया, गीता भी बनाया, वो तो दोनों ही कहेंगे– गीता और भागवत, महाभारत का पुस्तक का रामायण से क्या तैल्लुक है? तो देखो, रामायण भक्तिमार्ग...और आधाकल्प ये रावण का वो जलाते आते हैं ना बच्ची, ये सभी रावण का राज्य चल रहा है जैसे। पीछे ये जो महाभारत फिर आएगा, उसमें क्या होगा? सारा रावण राज्य खलास हो जाएगा। पीछे राम राज्य शुरू हो जाएँगे। तो देखो, रामायण और महाभारत का ये कितना फर्क है! रामायण है रावण की स्थापना। महाभारत है रावण के राज्य को खतम करना। ये महाभारत जिसके साथ तैल्लुक है ही गीता का; क्योंकि गीता से जब हम सुनें और लायक बनें विश्व का राजा बनने के लिए। तो सुनना पड़ता है ना। गोया गीता और ये महाभारत की लड़ाई। ये है रावण राज्य के खतम करने के लिए। समझा ना बच्ची। रावण राज्य आधाकल्प शुरू होते हैं। फिर वो खतम होने का है गीता और महाभारत की लड़ाई से। लड़ाई तो ज़रूर है ना वहाँ की। सिर्फ फर्क क्या , तो लड़ाई जो इन्होंने दिखलाई है ये महाभारत में, वो रॉंग है। लगी है लड़ाई। सारा खतम हुआ है मिसाइल्स की। बाकी तुम कोई रावण पर जीत पहनने के लिए या लड़ाई–वड़ाई का भाड़ा नहीं लेते हो। समझे! तुमको तो बाप आ करके गीता के दो अक्षर सुनाते हैं। गीता में है भी सारे विस्तार में– मन्मनाभव, मद्याजीभव। आदि भी मन्मनाभव मद्याजीभव, अंत भी मन्मनाभव मद्याजीभव। बीच में विस्तार है गीता में। तुम लोग गीता शायद कोई पढ़ी है बहुत? हँ, कोई ने पढ़ी है गीता, अच्छी तरह से हाथ उठाओ। तो गीता में हैं अक्षर! शुरुआत में भी है मन्मनाभव, पिछाड़ी में भी है मन्मनाभव। मामेकम्, मुझे याद करो। अब बच्चे समझ गए कि ये है बरोबर, गीता का एपिसोड चल रहा है इस समय में; परन्तु अगर गीता, हम लोग कहेंगे किसको गीता, तो ...– कृष्ण कहाँ है? क्या तभी यही कृष्ण है? फिर इनके ऊपर आ जाएगा। ये कृष्ण है, ये देखो गोपियाँ इनकी। ये किसको भगाते हैं, किसको नाचाते(नचाते) हैं, किसको जादू लगाते हैं, ये करते हैं, ये करते हैं। देखो, कितना रात–दिन का फर्क है– बाप के समझाने में और ये भक्तिमार्ग के शास्त्रों में कितना, कोई जानता होगा बच्ची! ये किसके बुद्धि में होगा कि रामायण क्या है, महाभारत क्या है। महाभारत की लड़ाई के बाद स्वर्ग के दरवाज़े खुलते हैं और फिर जब ये रामायण शुरू होते हैं तो नरक के दरवाज़े खुलते हैं। ठीक है ऐसे! अभी ये कहानी, ये बातें तुम अगर किसको बताएँगे ना, तो वो कुछ भी नहीं समझेगा एकदम। बोलेगा– ये पता नहीं क्या ये बोलते हैं, हमको तो कुछ समझ में नहीं। सिर्फ ऐसा कहने से आएगा किसके समझ में! अथवा सिर्फ...कहने से उनको– अलफ को याद करो और बे को याद करो तो इसमें कुछ समझ जाएँगे। अलफ माना बाबा। बाबा तो है ही बाबा। बाबा से तो वर्सा मिलेंगे। सो तो है ही हैविनली गॉड फादर यानी स्वर्ग की स्थापन(ा) करने वाला। इसलिए उस बाबा को याद करो। बाबा कहते हैं कि तुम्हारा (...)। फिर याद आएँगे गीता के दो अक्षर हुए, मन्मनाभव वाले के कि बाबा कहते हैं, अभी कृष्ण नहीं, वो ऐसे समझ जाएगा कि बाबा कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारा विकर्म सब विनाश होगा। उसमें है भगवानुवाच। अभी कृष्ण नहीं कह सकते हैं कि मेरे को याद करो। कृष्ण तो रूह है ना। मुरली वाला छोटा बच्चा दिखलाते हैं ना। अभी वो तो नहीं कहेगा ना– मामेकम्। मामेकम् बाप तो कहते हैं सारी दुनिया के लिए, कोई भी धर्म वाला हो। तो आत्माओं को कहते हैं ना बच्चे। तो इसमें कृष्ण की तो बात उठ ही नहीं सके बिल्कुल ही। तो देखो, एक ही गीता को कितना खण्डन किया हुआ है सारा। सारी दुनिया में बच्ची, गीता का बहुत प्रभाव है। गीता सभी लैंग्वेज़िस में, इतनी लैंग्वेज़िस

में हैं ना। तो गीता का प्रचार है और जब तुम राज्य करेंगे, तुम्हारी (तो) लैंग्वेज़ ही एक होगी, गीता का प्रचार भी नहीं, कुछ भी नहीं एकदम। लैंग्वेज़ भी एक होगी। कोई भी पुस्तक वगैरह, बाइबल–साइबल, धूर–छाई कुछ भी नहीं होगा। होगा... कहाँ से सतयुग में! सतयुग में ... तुमको ये सब बातें, भक्तिमार्ग की बातें, ये पर्दा वगैरह कुछ भी नहीं। न नॉविल पढ़ी जाती है, न शास्त्र पढ़े जाते हैं, कुछ भी नहीं, सिर्फ राजविद्या– राजाई के लिए कि चलाने के लिए। सो तो ज़रूर पढ़ेंगे ना। लैंग्वेज़ भी सीखेंगे, पढ़ेंगे। वो तो छोटे बच्चों को तो ज़रूर सिखलाना होता है ना। नहीं तो छोटे बच्चों को क्या कुछ मालूम पड़े? तो ये शास्त्रों में, बस और दूसरा कोई शास्त्र है नहीं, दूसरे किसको कोई तैल्लुक ही नहीं है। है ही भारत का तैल्लुक इनसे– रामायण और महाभारत। महाभारत के साथ गीता का तैल्लुक। भगवान सुनाने वाला। भगवान तुम बच्चों को गीता सुनाते हैं, जिससे तुम मालिक बनते हो। फिर महाभारी ... लड़ाई ज़रूर लगनी चाहिए, जो ये पतित दुनिया खतम हो जावे; क्योंकि गीता से तो तुम पावन बनते हो। ये तो समझ सकते हो कि भगवान पतित–पावन आते ही हैं गीता के ज्ञान द्वारा। फिर से सुनाओ, है ना। फिर से सुनाओ, तो आकर ऐसे ही कहते हैं– काम महाशत्रु है। इस पर तुम बच्चों को जीतना है। तो देखो, काम के ऊपर ही कितना बाबा ज़ोर देते हैं। यहाँ भी बोलते हैं– अरे भाई बच्चों, विकार में फिर नहीं जाना, काम से नहीं हार खाना। काम देखो कितना शत्रु है! कितना नुकसान करते हैं! काम के पिछाड़ी लड़ाइयाँ लगती थीं राजाओं की। ...बड़े–2 विलायत वाले भी, बड़े–2 नामी–ग्रामी मिनिस्टर्स काम के पिछाड़ी नाम बदनाम करते हैं। आखानियाँ निकलती हैं ना अख़बारों में भी। वो फलाना–2 था, वो एक बड़ी माई निकली थी, उनके पिछाड़ी गया कोई वहाँ का वज़ीर, का मालूम पड़ गया कि इनके साथ ये गंदा काम करते थे, फलाना करते थे। तो कितना नाम खराब हो गया था। ये काम के पिछाड़ी सारी खराबी होती है बिल्कुल ही। इसलिए बाप कहते हैं– मीठे बच्चों! बाबा के पास आते तो बहुत हैं यंगस्टर्स, देखो जवान–2 बच्चे, तो कोई को भी (...), कोई संन्यासियाँ कोई होवें, ऐसी बच्ची हैं और, पवित्र भी। ऐसे मत समझो कोई पवित्र दुनिया में मनुष्य नहीं, शादी नहीं करते हैं। सारी आयु ब्रह्मचारी रहते हैं। वो तो हुए संन्यासियों में भीष्म ब्रह्मचारी; परन्तु ऐसे मत समझो कि कोई यहाँ भारत में या विलायत में या कहाँ भी, कोई सारी आयु पवित्र नहीं रह सकते हैं। नहीं, बहुत रह सकते हैं। माइयाँ भी देखो ये नन्स होती हैं। ये कोई विकार में नहीं जाती हैं बच्ची। ऐसे तो होते हैं ना कि नहीं जाती हैं। तो भले वो जब नहीं जाती हैं तो खेल फिर क्या, क्यों नहीं कोई..जा सकते हैं; परन्तु यहाँ फिर सिर्फ पवित्रता की तो बात नहीं है ना कि एक जन्म में अगर वो पवित्र रहा तो उससे क्या फायदा होगा! ये तो बात है जन्म–जन्मांतर स्वर्ग का मालिक बनने की। उसमें बैठ करके जन्म–जन्मांतर का पाप कटना है। तभी फिर स्वर्ग में चलने का है। सो तो बाप आ करके युक्ति सिखलाते हैं। इस जन्म की तो बात नहीं है ना। इस जन्म में तुम जान चुके हो कि जन्म–ब–जन्म मनुष्य पाप में ज़रूर (...), समझो एक जन्म में कोई ये संन्यासी बना। अच्छा, संन्यासी भी बनें, तभी भी मूत से तो जन्म होते हैं ना, पतितपने से तो होते हैं ना। रावण राज्य है ना। इसमें तो विकार बिगर तो जन्म होता ही नहीं ना। इस बात के ऊपर तुम्हारे से बहुत मनुष्य पूछते हैं। बाबा के पास भी कब चिट्ठी आती है– तो वहाँ जन्म भला कैसे होगा? योगबल

किसको कहा जाता है? कैसे होगा? ऐसे पूछते हैं। अब ये पूछने का कभी भी किसको ज़रूरत है नहीं। जबकि कहा जाता है वो सम्पूर्ण निर्विकारी हैं, विकार हैं नहीं, रावण का राज्य ही नहीं है, पीछे प्रश्न उठाते ही क्यों हो? वो तो उस समय में निर्विकारी हैं तो ज़रूर निर्विकारी जन्म। पीछे कुछ न कुछ होगा। योगबल होगा। वो भी तो समझाया गया हुआ है कि अब बरोबर साक्षात्कार होते हैं। जब बुड्ढा होते हैं ना, तभी भी साक्षात्कार होता है कि हम जा करके अभी बच्चा बनूँगा, माता के गर्भ में जाकर प्रवेश करूँगा। अभी किसने कहा– माता के गर्भ में जाकर प्रवेश करूँगा? वो आत्मा कहती है ना– मैं ये शरीर छोड़ करके माता के गर्भ में (...)। अभी माता के गर्भ में, कोई–न–कोई माता के गर्भ में जाकर। ये उनको मालूम नहीं रहेगा कि फलाने घर में। ना, ये मालूम नहीं रहेगा। हम छोटा बच्चा जाकर बनेगा...। तो साक्षात्कार यहाँ तो ऐसे नहीं होता है ना। ये तो बात भी नहीं होती है; क्योंकि बाप ने समझाया– देखो, छोटी–2 बातें हैं, समझावें तुमको। वो तो जनावरों का समझाया ना, मोर और डेल का मिसाल देते हैं कि भई देखो, वो आँख से आँसू गिरता है, वो पकड़ती है, उनसे उनको हो जाते हैं। अच्छा, ये जो फल–फूल होते हैं ना। देखो, ये जो तुम खाते हो– पपैये। अभी तुमको मालूम है पपैये का भी एक झाड़ मेल का, एक झाड़ फिमेल का। यहाँ देखो, है यहाँ बगीचे में। (कुछ बच्चों ने कहा– पपीता) पपीता। ये दो झाड़ हैं। अभी ये बोलते हैं कि ये दो झाड़ अगर न होगा, तो उसमें फल नहीं होगा। भला वो हो गया मेल, वो हो गई फिमेल। भई, फिमेल को तो होगा ना बच्चा। तो क्या बाजू में मेल का झाड़ और ये फिमेल का झाड़। अरे बस, वो बाजू में हैं, तो उनमें बच्चे पैदा हो जाते हैं और उनमें बच्चे नहीं पैदा होते हैं। (किसी ने कहा– एक नर, एक मादा होता है) हाँ, नर–मादी। समझा ना! भला वो कैसे होते हैं? वो बच्चा कैसे पैदा करता है? बाजू में खड़ा है। हज़बैंड बाजू में खड़ा है और वाइफ बाजू में खड़ी है झाड़। वो क्या, बाजू में खड़े हैं, एक/दो को देखते और बच्चा पैदा हो जाते हैं। जब ऐसे है, ये जड़ चीज़ों में भी ऐसी कुछ बात है, तो वो चैतन्य में सतयुग में क्या नहीं होता होगा! ये भी डिटेल में चलो, बाप कहते हैं थोड़ा आगे और चलो, तो तुम बच्चों को ये भी समझ में आ जाएगा। सब तो अभी समझ में आया नहीं ना। बहुत ही प्वॉइंट्स हैं जो अभी सीखने की हैं; परन्तु फिर तो पहले तो तुमको चाहिए कि बाप से ही आकर तमो(सतो)प्रधान बनकर अपना वर्सा तो ले लो, नर से नारायण तो बन लो ना। पीछे वहाँ की जो रसम–रिवाज़ होगी बच्चा पैदा करने की, वो तो वहाँ की बात होगी; क्योंकि रावण राज्य तो है नहीं। तो पीछे कोई दूसरी युक्ति होगी। हम लोग समझा देते हैं कि योगबल से जब विश्व का मालिक बनते हैं, तो योगबल से बच्चा पैदा क्यों नहीं हो सकते हैं!...पीछे कैसे भी हो, प्यार से हो या कैसे भी हो! उसमें तुम रावण तो नहीं हो ना, रावण राज्य तो बिल्कुल नहीं है ना। तो उसमें पूछने की क्या दरकार! तो पूछने वाले (के लिए) ही समझेंगे, ये पूछ करके ही संशय में गिर पड़ेंगे। उसको रिस्पॉण्ड पूरा न मिलेगा ना, तो गिर पड़ेंगे। अगर पूरा रिस्पॉण्ड मिला तो थोड़ा ठहर जाएँगे। तो थोड़ी–2 बात के ऊपर भी माया उनको गिराय देती है, कोई न कोई बात में। संशय बहुत आते हैं ना बच्ची; क्योंकि तुम्हारी कोई भी इन शास्त्रों में ये बातें हैं नहीं जो तुम सुन रही हो। इनका कोई शास्त्र है नहीं ना बच्ची। इस ज्ञान का, जो बाप समझाते हैं, इनका कोई शास्त्र है नहीं। बनाया है भक्तिमार्ग के लिए। ज़रूर

चाहिए ना, सभी धर्म के शास्त्र चाहिए। अभी उसमें ये है भी कोई एक शास्त्र में कि परमपिता परमात्मा आय करके ब्राह्मण धर्म, सूर्यवंशी और चंद्रवंशी धर्म की स्थापना करते हैं। तो सूर्यवंशी हुआ सतयुग का, ...त्रेता का चंद्रवंशी और ब्राह्मण फिर होगा संगमयुग का। तो शूद्रवंश है फिर देखो कलहयुग में। तो बाप को ज़रूर संगमयुगे आना पड़े ना। अभी ये तो किसको मालूम (...) संगमयुग। कहते भी हैं, गाया भी हुआ है कि भगवान कहते– मैं संगम (...)। तो ये लोग ने कृष्ण को भी ठोंक दिया और फिर द्वापर का संगमयुग कर दिया है। तो देखो, कितनी गड़बड़ हो गई है ना। अगर ऐसी गड़बड़ न होती तो फिर बाप को क्यों आना पड़ता? तो ड्रामा में ये सभी गड़बड़–घोटाला बहुत है, जो बैठ करके बाप दिन–प्रति(दिन) समझाते हैं। तो बाबा ने समझाया ना बच्चों ने(को)। तो आज तो है। मनुष्य तो वो रावण बनाते हैं, ये बहुत पैसा उड़ाते हैं। जभी ये होते हैं ना तो खर्चा कितना होते हैं! आज दशहरा है। भई दशहरे का भी त्यौहार होता है ना। दशहरे का भी दिन–वार, ये दिवाली का भी त्यौहार। तो ये सभी बड़े दिन बनाए हैं, ये सभी रुपये लुटवाने का, पैसा बरबाद करने का। (किसी भाई ने कहा– मैसूर वाले बहुत, मैसूर में बहुत खर्चा किया) मालूम है ये सभी। मैसूर में क्या, यहाँ कम होता है क्या, तुम्हारे ये रामलीला ग्राउंड में! आज तो बस बात मत पूछो, बाण मार करके खर्चा करेगा; क्योंकि दो मिनिस्टर्स आए हैं बड़े–2, उनको उनको दिखलाने का है। तो क्या न करेगा, ...अपने भारतवासियों की निंदा करेंगे, अपने भारतवासियों के देवताओं की बहुत निंदा करेंगे, आज बहुत बड़े–2 आदमियों को सुनाएँगे। वो सुनेंगे। परन्तु जैसे वो है आसुरी सम्प्रदाय, तैसे वो आसुरी सम्प्रदाय। वो क्या जाने इन सब बातों के(से)। वो भी बोलेंगे जैसे हम अज्ञान काल में कहते रहते थे– हाँ, ये भी सत्य है, बरोबर सीता चुराई गई और जब सीता चुराई गई थी फलाने, हम नाटक देखते थे तो रोते थे। समझा ना! सब रोते थे। तो नाटक में देखने में भी रोते थे। ऐसे–2 ये नाटक बनाते हैं। कभी हरिश्चंद्र का नाटक बनाते हैं तो बैठ–2 करके रोते हैं। समझा ना! वो है ना उसका (किसी ने कुछ कहा) बच्चा को जाकर वो जलाना पड़ता है, फलाना करना पड़ता है। तो ये भक्तिमार्ग में कितनी दंतकथाएँ हैं, मारामारी फलाना–टीरा और यहाँ तो देखो, बाप कितनी अच्छी तरह से सब बात बैठ करके समझाते हैं। अब ये बातें सिवाय बाप के तो कोई सुनाय नहीं सके। बाप सुनाते हैं तुम बच्चों को। जो भी बच्चे आते रहेंगे पिछाड़ी तक। वो सुनाएँगे किसको? बोलता है, हम अपने बच्चों को सुनाते हैं। ये हमारे कौन–से बच्चे हैं? जो हमारे से पहले विदाई ले करके यहाँ आए थे राज्य करने के लिए और अभी वो पतित बन गए हैं। मैं पहले–2 उनको आ करके (...), उनके साथ सबका कल्याण। देखो, आते हैं तुम्हारे लिए ना। देखो, भारत बुलाते हैं ना। भारतवासी बुलाते हैं– हे पतित–पावन आओ। भले है वहाँ भी– लिबरेटर आओ। ओ लिबरेटर और गाइड आओ; परन्तु वो इतना कुछ भी .... ये मालूम नहीं है कि दुःख कौन देते हैं। ... मालूम है तुम बच्चों को कि बरोबर दुःख रावण राज्य में आते हैं; क्योंकि रावण यहाँ जलाते हैं। कोई दूसरी नेशनैलिटी में रावण थोड़े ही जलाते हैं; परन्तु ये जो जलाते हैं रावण को, उनको ये मालूम है नहीं कि ये कोई रावण क्यों जलाते हैं, कौन है, ये दुख कहाँ से आता है। ये कुछ भी मालूम नहीं है भारतवासियों को, बिल्कुल डिब्बे में ठीकरी और ऐसे ही होगा शायद। भई आगे हो गया है ऐसा कुछ। अभी कुछ भी नहीं हो गया। ऐसी कोई

बात हुई ही नहीं है बिल्कुल। तो बाप कहते हैं कि ये देखो, इतना बड़ा रामायण, झूठ। फिर कहते हैं कि महाभारत के द्वारा रावण का ये जो राज्य है, खतम होते हैं; परन्तु जो लिखा है महाभारत में, वो बातें सभी झूठ हैं। समझा ना बच्चे! इनका तुम्हारे ज्ञान से यही तैल्लुक है– तुम बच्चे जब बाप से राजयोग सीखते हैं तब ये ड्रामा के प्लैन अनुसार, तब जब तुम ये अपने राजयोग की पढ़ाई पढ़ करके पूरी करते हो, तब दुनिया का विनाश होना ही है, जिसका नाम फिर महाभारत रखो वा दशहरा रखो। महाभारत से भी रावण राज्य खलास होते हैं ना बच्ची और दशहरे का जो रामायण है, उसमें भी तो रावण को खतम कर देते हैं पिछाड़ी को। उनकी बैठ करके कहानी बनते हैं। आखरीन में खतम तो होते हैं ना। तो वो हैं हद का बातें, ये हैं बेहद की बातें। तो बाप भी समझाते हैं बच्चों को– बच्ची, ये खतम हो जाएगा। तुमको स्वर्ग का ये सभी महल बनने में देरी तो...। बनना तो है ना। ये तो तुम समझते हो देखो। तुम लोग जब इनको देखते हो। भला अच्छा ये है! ये जब देखते हैं ना इनको, हम राजकुमार बनेंगे, ये शरीर छोड़ करके फिर राजकुमार बनेंगे। तो क्या तुम नहीं बनेंगे? कोई एक ही राजकुमार होता है क्या सूर्यवंशियों में? तो जो अच्छी तरह से योग में रहते होंगे, जो अच्छी तरह से सर्विस करते होंगे, क्या वो नहीं कहेंगे– हम भी राजकुमार बनेंगे, हम भी कोई राजा का बच्चा..., हम इनके साथ जा करके आपस में खेलेंगे? क्यों तुम्हारे, तुमको ये नशा क्यों नहीं रहता? बाबा को तो नशा रहता। बाबा क्यों कहते मुझे बहुत अच्छा है ये चित्र। ये तो हमारा भविष्य का चित्र है ना। जितना खूबसूरत बने इतना अच्छा ही है। कितना नशा चढ़ता जाता है! तुम क्या बनेंगे राजयोग सीख? नर से नारायण ना। तुम पहले राजकुमार बनेंगे ना। स्वर्ग का महाराजकुमार बनने के लिए ये तुम पढ़ाई पढ़ रहे हो। ये कम है क्या! ...ये तुमको नशा क्यों नहीं बैठता है? ये ज्ञानी भाई, ज्ञानी जी? (भाई ने कहा– हाँ) नशा तुममें रहता है कोई ये? किसको भी नहीं रहता है। मैं समझता हूँ सिर्फ मुझे ही रहता है। जबकि कहते हो कि हम नर से नारायण बनते हैं, तो ज़रूर पहले महाराजकुमार ये बनेंगे ना यानी कृष्ण राज्य (...), देखो सबका तो महाराजकुमारों का नाम नहीं ना। समझाया ना– राधे दूसरे राज्य की है, कृष्ण दूसरे राज्य का है। आपस में सगाई होती है। अरे, बहुत ये राजकुमार–राजकुमारियाँ होंगी ना। तो फिर तुम ही बनेंगे ना, तुम्हीं पढ़ रहे हो ना। ..... क्यों नहीं तुम्हारे में ये नशा चढ़ता है! जो बाबा पूछते हैं– नारायणी नशा चढ़ता है? तो सिर्फ नारायण थोड़े ही, पहले तो महाराजकुमार बनेंगे ना। तो नशा चढ़ता है कि हम भविष्य में विश्व का महाराजकुमार या महाराजकुमारी बनेंगे। तुमको नशा चढ़ता है हम विश्व की महाराजकुमारी बनेंगे? स्थायी नशा क्यों नहीं रहता है, जबकि जो बैरिस्टर बनते हैं बैरिस्टरी में, तो उनको निश्चय है ना कि हम बैरिस्टर बनेंगे और जा करके हम कोर्ट में लॉ सीखेंगे, ये करेंगे! तो तुम भी जैसे महाराजकुमार करके, बड़ा हो करके राजाई करेंगे। क्यों नहीं तुम्हारे को नशा बैठता है, ये बताओ। ...क्यों, माया ऐसी ज़बरदस्त है, अरे पढ़ाई को कभी नहीं भुलावे(गी)। वो तुमको क्यों भुलाती है? दूसरी दुनिया के लिए ये जो पुस्तक–किताब पढ़ते हैं, एम०ए०, बी०ए० फलाने, वो नहीं भूलते हैं। टीचर को भी नहीं भूलते हैं। अपने एम–ऑब्जेक्ट को नहीं..., तुम क्यों भूल जाते हो? बाबा जब पूछते हैं– अरे भई, क्या लेने के (लिए) आए हो बाबा से? बाबा, वर्सा लेने। कौन–सा? हम नर से नारायण बनने का, नारी से लक्ष्मी बनने का। जब ऐसे है

तब तुमको ये नशा क्यों नहीं चढ़ता है– हम ये शरीर छोड़ करके (...)। जैसे बाबा कहते हैं ना कि सतयुग में बुड्ढा शरीर छोड़ करके हम फिर से तो राजकुमार बन जाएँगे। राजकुमार तो होते ही हैं, महाराजा तो होते ही हैं। यहाँ तुमको नशा क्यों नहीं चढ़ता है– हम ये शरीर छोड़ करके, हम पढ़ाई पढ़ रहे हैं और शरीर छोड़ करके हम महाराजकुमार जाकर बनेंगे? यहाँ से जो बच्चे जाते हैं ना, जो मरते हैं, यथा योग, यथा ज्ञान जो यहाँ शरीर छोड़ते हैं, वो भी बड़े घर में जाकर जन्म लेते हैं। ऐसे मत समझो (...)। जो बड़े–ते–बड़े घर वाले होंगे ना, जो ऊँचे–ते–ऊँचे साहुकार होंगे ना। अलफ को याद करो, बे बादशाही को याद करो यानी शांतिधाम को याद करो, सुखधाम को याद करो, तो फिर ये भी याद आवे ना कि हम सतयुग में सतयुग का महाराजकुमार–महाराजकुमारी बनेंगे। नाम तो सबका अलग–2 होते हैं ना। सभी तो कोई एक नाम वाले तो नहीं होते हैं ना। वो तो वहाँ हेड जो होते हैं, उनकी बात। बाकी भी तो बनते हैं ना। माला तो है ना। दूसरे भी तो होंगे, कोई एक थोड़े ही होंगे। तो क्यों तुम्हारे को ये नशा नहीं चढ़ता है? क्योंकि इतनी सर्विस नहीं करते हो पूरी, तो नशा भी नहीं चढ़ता है। सर्विस करो और जो कहते हो मुख से कि हम आए हैं बाबा से, टीचर से, किससे भी, हम मनुष्य से महाराजकुमार बनें। तो क्या, तुमको महाराजकुमार बनने का नशा क्यों टूट जाते हैं? टूट जाता है तब कि तुम याद नहीं करते हो– अलफ और बे, अपने पद को, न स्वीट होम को याद करते हो, न अपने स्वीट स्टेटस को याद करते हो, जो पद मिलते हैं। घड़ी–2 भूल जाते हो। सारा दिन में मैं नहीं समझता हूँ कि कोई एक दफा भी...ये याद करता होगा, युक्ति से। तो बाबा समझे... मुझे तो बहुत खुशी रहती है। मैं चित्र देखता हूँ– ओहो! शरीर छोड़ करके महाराजकुमार बनूँगा विश्व का। तो ये भी जानता हूँ कि मेरे साथ, कोई मैं ऐकला(अकेला) थोड़े ही हुँगा, नहीं, बहुत ही बनेंगे। जो–2 पुरुषार्थ करते रहते हैं, उनमें से कोई भी। ये तो समझता हूँ महाराजकुमारी बनेंगे मम्मा जा करके। ये भी तो बाबा को याद है ना। अच्छे हैं ना। वो भी जाकर महाराजकुमारी बनेंगे और मैं जान सकता हूँ, जो भी सर्विस करने वाले अच्छे हैं मेरे पास, जो सर्विस बहुत अच्छी करते हैं हड्डी, मैं ये भी समझ सकता हूँ, ये जो मेरी बच्ची है ना, ये जा करके महाराजकुमारी बनेगी। ऐसा मुझे अच्छा सिद्ध होता है कि ये बड़ी अडोल सेवा करती है। बस, सेवा बिगर रहती नहीं है। अच्छा, कोई बच्चे को देखता हूँ– उफ! ये बिचारा बहुत तड़पता है– बस, सेवा। ये करने की, ये करने की...; परन्तु थोड़े। समझा ना! तो ये भी सर्विस इतनी करती है अपना। ये भी जा करके ... महाराजकुमार तो बनेगा। किस नम्बर में बनेगा वो अभी, हाँ आता है बुद्धि में कुछ ना, आगे चल करके देखेंगे; क्योंकि पढ़ाई चल रही है ना। अच्छा, इनको आता है, तुम बच्चों को क्यों नहीं आना चाहिए? जबकि मुख से कहते हो– हम तो बाबा–मम्मा, आपको फॉलो करते हैं, आपके गद्दीनशीन बनेंगे, तो क्यों नहीं भला खुशी का पारा चढ़ता है? ... और फिर समझाएँ, सो तब होगा जब इसको उगारेंगे, मंथन करेंगे। जैसे गा–गऊआ घास खाती हैं तो उगारती रहती हैं ना। तो तुमको भी सारा दिन एक तो बाप को याद करना है, जितना टाइम मिले, फिर इनको रिपीट। अभी वो तो हुआ जनावर। तुमको जब टाइम मिलते हैं तो पहले–2 इनको उगारो। जैसे यहाँ बैठ करके आपस में प्वॉइंट्स पूछते हैं ना– बाबा ने आज क्या नई–2 प्वॉइंट्स (...), सुनाओ। तुम बताओ, तुम बताओ, तुम बताओ। तो घड़ी–2 उनकी प्वॉइंट्स का पक्का हो

जावे। ये तो जानते हैं बाबा, घर में जाएँगे, भूल जाएँगे। यहाँ अभी आए हुए हो ना, ये जानते हो ना कि हम बापदादा के पास अर्थात् सागर के पास आए हुए हैं। इन सागर के साथ एक नदी भी है, उसका नाम ही है–ब्रह्मपुत्री। देखा है कलकत्ते में ब्रह्मपुत्री नदी? उसकी जो फ्लड्स होते हैं ना, बहुत जो गाँव डूबते हैं, तो उस द्वारा। ब्रह्मपुत्रा, ये पटना इस तरफ में, ...उसमें पानी बहुत होते हैं। तो ये भी बड़ी नदी है ज्ञान की; परंतु बाबा कहते हैं कि नहीं, ये शिवबाबा ही है जो तुमको इन द्वारा सुनाते हैं। इसलिए मेरा नाम कभी याद नहीं करो, शिवबाबा का ही याद करो। समझा ना! ये (तो) समझ की बात है; परन्तु याद करो हमें। नहीं, ये सब शिवबाबा चलाते हैं। हम शिवबाबा से सुनते हैं। अभी तो कभी किसकी बुद्धि में ही नहीं आवे। गीता वालों की बुद्धि में कृष्ण आवे। अरे तो फिर भी गीता, गीता वालों की भी बुद्धि, फिर ये किसके बुद्धि में आवे? सिर्फ तुम बच्चों को कि बाप और दादा। कृष्ण को बापदादा नहीं कहेंगे। नहीं, इसको नाम ही है–बापदादा। बाप कहते हैं मैं इनमें प्रवेश करके तुमको सुनाता हूँ। इसका नाम प्रजापिता ब्रह्मा। तो ये भी तुमको कोई ज्ञान नहीं सुनाते। मैं सुनाता हूँ और ये भी सुन करके सुनाय सकते हैं, सुनाते होंगे; परन्तु कहते हैं कि नहीं, यहाँ आते हो ना तो शिवबाबा ही तुमको सुनाते हैं, ऐसे करो तो शिवबाबा को याद करते रहो। इनको याद, तभी तो बाबा कहते हैं इनका फोटो क्यों निकालते हो? शिवबाबा का तो फोटो निकल नहीं सकते हैं, फिर इनका फोटे क्यों निकालते हो? फालतू है बिल्कुल ही; इसलिए निकालने नहीं देते। (किसी ने कहा– इनका याद आता है, बाबा) नहीं, याद तो ऐसे आत्मा है, उनको बाप याद आना है। उसको यूँ भी याद कर .... इसमें नहीं था। तुम मुझे याद करते थे। किसके द्वारा याद करते थे? किसके तन द्वारा याद करते थे? आत्मा अपने तन द्वारा बाप को याद करते थे। (किसी ने कहा– हाँ बाबा, विकर्म नहीं विनाश होंगे) हाँ–2, वो तो बात ठीक है। तो भी विकर्म विनाश होते हैं जबकि शिवबाबा को याद करती हो। तो बाप वही बाप, जिसको तुम याद करते थे, नहीं जानते थे कुछ भी। वो अभी अपना पहचान दे करके– न, मुझे ऐसे याद करो। बाकी ऐसे तो नहीं कहते हैं कि इसको याद करो। तुम याद करते आते हो कि हम आत्मा हैं, वो परमात्मा है। ये भी जानते हो कि हम आत्मा बिन्दी समान है, स्टार है भृकुटि के बीच में। ये भी जानते हो कुछ–2 कोई–2, सब नहीं जानते हैं। ये आत्मा भृकुटि के बीच में ठहरता है यानी हुआ ना। अच्छा, वो आत्मा, ये तो हो गया कि बरोबर छोटा ही समझते हैं, सितारे के माफिक। फिर बाप को नहीं जानते हैं। फिर याद तो करते हैं ना अपने शरीर द्वारा, अपने रथ द्वारा। ये भी आत्मा का रथ है ना। तो आत्मा अपने रथ द्वारा परमात्मा को न जानती है। याद करती है ऐसे– ओ बाबा! ओ गॉड फादर! ओ शिवबाबा, चलो भला। शिव को भी तुम परमात्मा कहते हो ना; परन्तु उनकी नॉलेज पूरी न होने कारण कुछ भी नहीं समझते हैं। बाकी अभी भी तो यही बात बाबा कहते हैं ना– तुम आत्मा हो ना। तो जैसे तुम आगे याद करते थे परमात्मा को; परन्तु उनको जानते नहीं थे। अभी तुमको पहचान दिया है, उस रीति से तुम याद करो। तो फिर इस शरीर का क्या महत्व हुआ? अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार और गुडमॉर्निंग।